

सहिया के सशक्तिकरण की कहानी

मैं **मानपति देवी**, लवाचम्पा गाँव के लोग मुझे **सहिया दीदी** के नाम से जानते हैं। जिला मुख्यालय गढ़वा से 36 किलोमीटर एवं प्रखण्ड मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर अवस्थित इस गाँव का जनसंख्या 1236 एवं कुल 210 परिवार रहते हैं। 2007 में सहिया में चयन होने से पहले बाकी गृहिणी के तरह ही पारिवारिक कामों में व्यस्त रहती थी। मेरे तीन बच्चे 10 साल की बेटी 8 साल एवं 5 साल का बेटा इनहि के साथ मेरा काफी समय काटता था ।



जब मेरा चयन सहिया में हुआ उस समय मुझे स्वास्थ्य के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी नहीं थी । मेरे गाँव के लोग



भी स्वास्थ्य के बारे में बहुत ज्यादा जागरूक नहीं थे । बीमार होने पे अस्पताल न जाकर घर में ही झोलाछाप डॉक्टर से इलाज या ओझा से झाड़-फूंक करवाते थे। मेरे लिए यह बहुत ही चुनौती के तरह था, लगता था की कैसे मुझे स्वास्थ्य के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हो ताकि मुझे जो काम दिया गया है अपने गाँव वाले को स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने का उसे आसानी से कर पाउ । धीरे-धीरे मैं काम सीखने लगी एवं सरकार के तरफ से भी बीच-बीच में प्रशिक्षण होने लगा । और मैं अपने गाँव में सहिया का काम करने लगी एवं गाँव के लोगों को स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने में मदद करने लगी।

धीरे - धीरे गाँव के लोग सहिया क्या है और वह क्या करती है समझने लगे । मैं भी घर - घर जाकर अपने गाँव के लोगों को समझाती थी कि अगर कोई भी बीमार पड़े तो स्वास्थ्य केंद्र चलिए मैं भी साथ में चलूंगी और अपने बच्चे को टीकाकरण करवाइए उससे बच्चे बीमार होने से बचेंगे। धीरे-धीरे लोग कुछ समझने लगे और स्वास्थ्य केंद्र एवं टीकाकरण भी करवाने लगे। इसी तरह समय बीतने लगा ।

इसी बीच 2010 में मेरे पति मुझे छोड़कर चले गए और दूसरे जगह रहने लगे मैं बहुत अकेली हो गई मेरे तीनों बच्चों का जिम्मेवारी मुझ पर आ गया घर का देखभाल, बच्चे का पढ़ाई, बच्चों की देखभाल, फिर भी मैं हिम्मत नहीं हारी और रुकी नहीं । बच्चों एवं घर की देखभाल के साथ-साथ मैं सहिया का काम करती रही और गाँव के लोगों को स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने में मदद करती रही । कहते हैं किसी भी काम को लगन और मेहनत से करो तो सफलता जरूर मिलती है, और इसी सोच की साथ मैं आगे बढ़ती रही ।



2011 में मेरे काम को देखते हुए मेरा चयन **सहिया साथी** के पद पर हुआ । मैं बहुत खुश थी लेकिन इसके साथ-साथ- मेरी जिम्मेदारियाँ और काम का दायरा बढ़ने लगा । क्यो



की पहले मुझे एक गाँव में सहिया का काम करना पड़ता था और अब 12 गाँव एवं 15 सहियाओ के बीच काम करना और उन्हें मदद करना था । ये मेरे लिए पहला चुनौती नहीं था और मैं तैयार थी।

पहले मैं गाँव-गाँव पैदल ही जाया करती थी फिर सरकार के तरफ से साइकिल मिला उससे मैं अपना काम करने लगी, जैसे गर्भवती महिलाओं का प्रसव पूर्व जांच, प्रसव पश्चात देखभाल, बच्चों का देखभाल, बच्चों का टीकाकरण, बच्चों को कृमि की दवा खिलाना, कुपोषित बच्चों को कुपोषण उपचार केंद्र ले जाना, टीवी के मरीजों को दवा खिलाना इस तरह से सभी स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने में अपने गाँव के लोगों को मदद करती रही साथ साथ अपने क्लस्टर के सहियाओ को भी समय-समय पर मदद करने लगी। और ये करना मुझे बहुत अच्छा लगता था। मैं अपने गाँव में लगभग **10 टीवी के मरीजों** को दवा खिलाई और आज वह बिल्कुल स्वस्थ हैं मुझे स्वास्थ्य केंद्र की तरफ से जो भी जिम्मेदारी दिया जाता है उसको समय पर करती हूँ इसी तरह मैं आगे बढ़ती रही।



इसी प्रकार 2017 में पीएलए कार्यक्रम आया और कैसे उसको करना है उसका प्रशिक्षण मिला । उसमें बताया गया की सहिया साथी को अपने कलस्टर के प्रत्येक सहिया के गाँव में जाकर विषम - सम संख्या के अनुसार **(एक माह विषम संख्या वाली सहिया के गाँव एवं दूसरा माह सम संख्या वाली सहिया के गाँव)** पीएलए बैठक करना है । इसमें एक चीज और था की जब विषम संख्या वाली सहिया की गाँव में बैठक होगा उस समय सम संख्या वाली सहिया बैठक में शामिल होगी और सीखेगी और फिर अपने गाँव में जाकर बैठक करेगी। और मेरा कर्तव्य एवं जिम्मेदारी था की मेरे क्लस्टर के सभी सहिया बैठक सही तरीके से कर पा रहे हैं उसको सुनिश्चित करना।

इन सारी चीजों को ध्यान में रखते हुए मुझे लगा की एक स्कूटी ले लूँगी तो मेरा जाना आना आसानी होगा और जल्दी एवं ज्यादा जगह पर पहुच पाऊँगी एवं समय का भी बचत होगा और इसी ख्याल के साथ मैं स्कूटी लिया। उसके बाद मैं स्कूटी खरीदी और अपने क्लस्टर के सभी सहिया को पीएलए बैठक करने में मदद करने लगी। अब मुझे अपने गाँव के अलावा क्लस्टर के 12 गाँव के लोग जानने लगे हैं। इस बैठक से पहले मैं अपने गाँव में घर-घर जाकर या 2-4 लोगों को स्वास्थ्य के बारे में सलाह देती थी बैठक के माध्यम से गाँव के बड़े समूह के बीच स्वास्थ्य के बारे में चर्चा करने का मौका मिला ।

शुरुआत में तो मुझे बड़े समूह में बोलने में बहुत झिंझक हुआ लेकिन धीरे-धीरे बैठक करते करते मेरे अंदर से झिंझक खत्म हुआ एवं आत्मविश्वास बढ़ा और जब मैं पीएलए बैठक संख्या 8 (सामुदायिक बैठक) कि उस समय पहले से भी बड़े समूह में स्वास्थ्य के बारे में चर्चा करने का अवसर मिला और मैं बेझिंझक माइक में बोलने लगी। अब मुझे कितना भी भीड़ भाड़ वाले जगह में बोलने का मौका मिलेगा तो मुझे कोई परेशानी नहीं होगा। मेरा आत्मविश्वास पहले से काफी बढ़ गया है अब मेरे गाँव के लोगों को किसी तरह का स्वास्थ्य सुविधा का जरूरत पड़ता है तो सबसे पहले मुझसे मिलने आते हैं या मुझे बुलाते हैं गाँव के लोग मुझे पहले से ज्यादा इज्जत एवं मान सम्मान देते हैं इससे हमें काफी खुशी मिलती है।



इसी तरह सब कुछ अच्छे से चल रहा था इसी बीच कोरोना संक्रमण आ गया यह भी बहुत बड़ा चुनौती था। ज़िंदगी में चुनौतियों से लड़ना एक आदत से बन गया है इसको भी मैं इसी तरह से लिया ।

कोरोना काल में भी मैं अपने गांव के लोगों को हर संभव मदद करने में लगी हुई हूं। मां एवं बच्चों को देखभाल के साथ-साथ बच्चों को टिकाकरण करवाना, कृमि की दवा खिलाना, बच्चों को कुपोषण उपचार केंद्र में भेजने हेतु सलाह देना, गांव के लोगों को फाइलेरिया की दवा खिलाना या कोरोनटाइन



सेंटर में 28 दिन तक लोगों का फॉलोअप करना या गांव में जन स्वास्थ्य सर्वे के दौरान कोरोना के लक्षण पाए गए लोगों को स्वास्थ्य केंद्र भेजना एवं जांच करवाने हेतु प्रेरित करना या कोरोना से कैसे बचा जाए उसके लिए लोगों को जागरूक करना सभी तरह के दिशा निर्देश को अपने गांव के लोगों के बीच पहुंचाने का काम कर रही हूँ।

जब खुद को मैं देखती हूँ की पहले मैं कहा थी और आज कहा हूँ तब हमें बहुत संतुष्टि मिलता है। मैं अपनी निजी ज़िंदगी के बारे में बात करूँ तो मैं अपनी बेटी की शादी कर चुकी हूँ। और मेरे दोनों लकड़े अच्छे से पढ़ाई कर रहे हैं और वो भी अपने ज़िंदगी में आगे बढ़ रहे हैं। आज मैं काफी खुश हूँ ।

